IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 3, May 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

आधुनिक युग में संस्कृत की उपदेयता

Sanwar Mal Jat

Assistant Professor in Sanskrit, Govt. Girls College, Chomu, Rajasthan, India

सार

दुनिया की 97 प्रतिशत भाषाएँ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संस्कृत से प्रभावित हैं। यह अकेली ऐसी भाषा है जिसे बोलने में जीभ की सभी संवेदिकाओं का इस्तेमाल होता है। अमेरिकन हिंदू यूनिवर्सिटी के मुताबिक संस्कृत बोलने से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है और रक्त का प्रवाह बेहतर होता है। संस्कृत साहित्य मानव सभ्यता के प्राचीन इतिहास से जुड़ी विश्व की प्राचीन भाषा है जो कि आधुनिक भाषा के रूप में सर्वथा सार्थक है। संस्कृत भाषा को लोकप्रिय एवं हर व्यक्ति के जीवन की आवश्यकता बनानी चाहिए तभी लोग संस्कृत के प्रति अपना उत्साह दिखाएंगे। आज के भौतिकवादी युग में संस्कृत भाषा को सबसे विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है परन्तु हमेशा ही आम लोगों के प्रोत्साहन एवं विश्वास के कारण यह समृद्ध भाषा रही है। ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा झंडेवालान करोल बाग नई दिल्ली में आयोजित संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला के मुख्य अतिथि दिल्ली संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष एवं शिक्षाविद् डॉ. श्रीकृष्ण सेमवार ने व्यक्त किए।

परिचय

डॉ. सेमवाल ने आगे कहा कि आज की प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्देश्य यह है कि शिक्षा के पाठ्यक्मर में शिक्षण की नई-नई विध्यां आ रही हैं। आधुनिक शिक्षा त्वरित एवं तकनीकी माद्यम पर आधारित हो गई है। हमें भी शिक्षम के क्षेत्र में सभी पहलुओं पर आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। संस्कृत शिक्षण को भी इसी के अनुरूप बनाना चाहिए।[1] संस्कृत को संस्कृत भाषा के माध्यम से ही पढ़ाना चाहिए। छात्रों में संस्कृत शिक्षा के प्रति लगाव बढ़ाने के लिए संस्कृत को सरल एवं लोकप्रिय पाठ्यक्रम सामग्री से युक्त किया जाना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक एवं प्रयोगात्मक शिक्षा का महत्व बढ़ता जा रहा है। संस्कृत भाषा में विषयवस्तु प्राचीन काल से ही निहित है। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री लाल बहादुर शास्त्ाr राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के प्रशिक्षण विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. चन्द्रहास शर्मा ने कहा कि वर्तमान समय में संस्कृत के महत्व को सभी देश समझ रहे हैं। विदेशों में शोध से ज्ञात हुआ है कि संस्कृतके मनन एवं चिन्तन से व्यक्ति की कार्य क्षमता बढ़ती है।[2] न्याय व्यवस्था बनती है। इसलिए कई देशों में गीता का अध्ययन शिक्षा में शामिल कर दिया है। संस्कृत संसार के लिए सबसे बड़ी निधि है। इसमें समाज के निर्माम की क्षमताएं हैं। संस्कृत में गहराई है। तत्वदर्शन है। विद्यालय स्तर पर संस्कृत अधिक से अधिक छात्रों को संस्कृत से जोड़ा जा सकता है। यही एक कुशल शिक्षक का गुण होता है।[3] कार्यक्रम इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री लाल बहादुर शास्त्ाr राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के प्रशिक्षण विभाग के अध्यक्ष प्रो. नागेन्द्र झा ने कहा कि शिक्षकों से मेरा आग्रह है कि वे अधिक से अधिक संस्कृत भाषा काप्रयोग आपस में बातचीत के लिए करें। कोई भी भाषा बोलने से ही जीवंत रहती है। संस्कृत को जीवंत बनाए रखने के लिए अधिक से अधिक बोलचाल में संस्कृत भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। विद्यालय स्तर पर संस्कृत को संस्कृत भाषा में ही पढ़ाने का प्रयास करन ाचाहिए। इससे छात्रों को संस्कृत बोलने पढ़ने का स्वत ही ज्ञान हो सकेगा। आज के तकीनीकी युग में संस्कृत विषय को उन्नत रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। [4]शिक्षकों को शिक्षण के नए-नए प्रयोगों के माध्यम से संस्कृत शिक्षण को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाने का प्रयास करना चाहिए। संस्कृत भारतीय संस्कृति की प्राणस्वरूपा; भारतीय धर्म-दर्शन आदि का प्रसार करने वाली; विश्व की सभी भाषाओं में प्राचीनतम तथा सर्वमान्य रूप में ग्रहण की गई है। सम्पूर्ण वैदिक-वाङ्मय, रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृतिग्रन्थ, दर्शन, धर्मग्रन्थ, महाकाव्य, काव्य, नाटक, गद्यकाव्य, गीतिकाव्य, व्याकरण तथा ज्योतिष संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध होकर इसके गौरव को बढाते हैं, जो भारतीय सभ्यता, भारतीय संस्कृति और भारतीय धरोहर की रक्षा करने में पूर्णतः सहायक है।[5] संस्कृत से सुसंस्कृत समाज का निर्माण होता है, जैसे- वैदिक संस्कृति में गर्भ से पंचतत्व विलय पर्यन्त षोडश संस्कार का विधान है। संस्कार से शरीर और मन पवित्र होता है; पर्यावरण शुद्ध होता है। संस्कारों का वैज्ञानिक महत्त्व भी है। जिस प्रकार उदर के लिए भोजन की आवश्यकता होती है; उसी प्रकार नैतिक मूल्यों से ही मानव अपनी सभ्यता का परिचय देता है। संस्कृत साहित्य में ऐसे सुभाषितों की भरमार है; जो मनुष्य की सभी समस्याओं का समाधान करते हैं;[6] जैसे-

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्।
आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ।।

उपर्युक्त शास्त्रीय और आधुनिक रूप से संस्कृत के महत्त्व को स्वीकार करते हुए ‘नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020’ में भी बहुभाषावाद को प्रासंगिक बताते हुए शिक्षाक्षेत्र के सभी स्तरों पर संस्कृत को जीवन जीने की मुख्य धारा में शामिल कर अपनाने पर बल दिया

गया है। अतः संस्कृत का अध्ययन कर के छात्र-छात्राएं न केवल अपने-अपने अतीत से गौरवान्वित होकर वर्तमान में संतुलित व्यवहारशील की ओर अग्रसर होंगे; अपितु भविष्य के प्रति भी उल्लासित होंगे।[7]

इस भाषा की वैज्ञानिकता का अध्ययन करके ही अनुसंधान संस्था नासा ने 1987 ई. में ही संस्कृत को कंप्यूटर के लिए सर्वोत्तम भाषा घोषित कर दिया था, जिस कारण आज उस संस्था के द्वारा संस्कृत में सतत शोध किए जा रहे हैं। पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ने पाणिनि-व्याकरण को मानवीय-बुद्धिमत्ता की सर्वोत्कृष्ट रचना कहा है। आज भी अमेरिका, जर्मनी आदि अनेक देश संस्कृत के क्षेत्र में सतत उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य करके इसकी श्रीवृद्धि में प्रयत्नशील है। अमेरिका की सबसे बड़ी संस्था नासा (National Aeronautics Space Administration) ने संस्कृत भाषा को अंतरिक्ष में कोई भी मैसेज भेजने के लिए सबसे उपयोगी दावा माना है; क्योंकि संस्कृत के वाक्य उल्टे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलते है। दुनिया की 97 प्रतिशत भाषाएँ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संस्कृत से प्रभावित हैं। यह अकेली ऐसी भाषा है जिसे बोलने में जीभ की सभी संवेदिकाओं का इस्तेमाल होता है। अमेरिकन हिंदू यूनिवर्सिटी के मुताबिक संस्कृत बोलने से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है और रक्त का प्रवाह बेहतर होता है। नासा की एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका छठी और सातवीं पीढ़ी के ऐसे सुपर कंप्यूटर तैयार कर रहा है, जो संस्कृत पर आधारित होंगे। संस्कृत की पांडुलिपियों पर शोध के लिए नासा में अलग से एक डिपार्टमेंट बनाया गया है। नासा के पास ऐसी 60 हजार से ज्यादा पांडुलिपियां हैं। [8]वहीं लंदन के जेम्स जूनियर स्कूल में सभी छात्रों के लिए संस्कृत की पढ़ाई अनिवार्य है। कनाडा में पहली से आठवीं तक संस्कृत भाषा की शिक्षा दी जा रही है । बोलचाल की भाषा में संस्कृत भारत के संविधान में आठवीं अनुसूची में शामिल है; जबकि उत्तराखंड राज्य में इसे दूसरी राजकीय भाषा का दर्जा हासिल है। इसके अलावा देश के कई हिस्सों में इसे सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।[9] कर्नाटक के मुत्तूर, मध्यप्रदेश में नरसिंहपुर जिले के मोहाद और राजगढ़ जिले के झिरि, राजस्थान के बूंदी जिले के कापेरान, बांसवाड़ा जिले के खाडा और गनोड़ा, उत्तरप्रदेश के बागपत में बावली और ओडिशा के श्यामसुंदरपुर गांव में संस्कृत बोलचाल की भाषा है।[10]

संस्कृत में इतनी वैज्ञानिकता होने के कारण ही अमेरिका, रूस, स्वीडन,कनाड़ा, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, आस्ट्रिया देशों में नर्सरी से ही बच्चों को संस्कृत पढ़ाई जाने लगी है। कहीं ऐसा न हो कि हमारी संस्कृत कल वैश्विक भाषा बन जाए और हम संस्कृत को तुच्छ या मृत भाषा का दर्जा देकर उस पर केवल थोड़े और भद्दे मसखरों की भाषा समझते रहे। आने वाले समय में संस्कृत कंप्यूटर की भाषा बनने जा रही है। अतः अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ अपने बच्चों को संस्कृत का ज्ञान अवश्य दिलाएं । संस्कृत का उपहास करके हम अपनी जननी, अपनी सभ्यता और संस्कृति का उपहास नहीं करें।[11]

विचार-विमर्श

"संस्कृत" विश्व की महान तथा रोचक भाषाओं में से सबसे प्राचीन और उत्तम भाषा है, इसे भारत में देवताओं की भाषा के रूप में जाना जाता है। इसके ज्ञान का भंडार, दुनिया का नायाब और अमूल्य खजाना है। इसे भारतीय भाषाओं की जननी के रूप में भी जाना जाता है। यह भारतीय परंपरा और विचार का सच्चा प्रतीक है, जिसने सत्य की खोज में पूर्ण स्वतंत्रता प्रदर्शित की है और विश्वव्यापी सत्य के प्रति उदारता दिखाई है। यह शास्त्रीय भाषा हमारी पुरानी सांस्कृतिक विरासत के एक बड़े हिस्से का भंडार भी है, इसमें विज्ञान या ज्ञान सभी प्रकार की विद्याएं हैं।[12]

भाषाई और भाषाशास्त्र के विशेषज्ञों द्वारा एक भाषा के रूप में संस्कृत को संचार का एक आदर्श माध्यम माना जाता है। व्यावहारिक धरातल पर व्याकरण, ध्वनि-शास्त्र, शब्दावली और देवनागरी लिपि के संदर्भ में, संस्कृत संचार का एक कुशल माध्यम बन गया है। [13]आधुनिक युग में संस्कृत को विश्व की वैज्ञानिक भाषाओं में से एक माना जाता है, जिसकी देवनागरी लिपि कंप्यूटर के विभिन्न कार्यक्रमों में आसानी से उपलब्ध है। हाल के आनुभविक अध्ययनों से, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और संचालन में उपयोग के लिए विभिन्न भाषाओं और लिपियों की सापेक्ष उपयुक्तता के बारे में संकेत मिलता है, कि देवनागरी लिपि में संस्कृत न केवल सुविधाजनक थी बल्कि उपयोग के लिए एक सर्वोत्तम माध्यम के रूप में हर ज़रूरत को पूरी तरह से संतुष्ट करती है। अब आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में, [14]समाज में लोगों की सभी प्रकार की प्रगति के लिए वैश्विक क्रांति के एक नए युग की शुरुआत करने में, कंप्यूटर शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभर रहे हैं। संस्कृत अध्ययन के उद्देश्य से, संयुक्त शिक्षा के इन नए उपकरणों द्वारा होने वाले लाभों को भारत और विदेशों में भी अपनाया जा रहा है। पारंपरिक संस्कृत अध्ययनों को संरक्षित करने, लोकप्रिय बनाने और प्रचारित करने के लिए, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी का सही उपकरण के रूप में उपयोग किया जा रहा है। वर्तमान समय में, वैदिक ग्रंथ, महाभारत, रामयण, और पुराण जैसे कई संस्कृत ग्रंथ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। ये ग्रंथ इंटरनेट पर रोमन (Roman) लिपि में विशेषक चिह्नों के साथ मौजूद हैं। इनके अलावा कुछ तांत्रिक[15] और अन्य दुर्लभ ग्रंथ भी इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। भारतीय विरासत के रूप में ताड़ के पत्तों (Palm leaves) और भुरजा के पत्तों (Bhurja leaves) जैसी संस्कृत हस्तलिपियों को माइक्रोफिल्म्स (Microfilms) और डिज़िटाइज़ेशन (digitization) प्रणालियों के माध्यम से संरक्षित किया जा रहा है, इन्हें सीडी (CD) और अन्य संबंधित प्रौद्योगिकी के माध्यम से कंप्यूटर में भी देखा और पढ़ा जा सकता है।[16]

योग के बाद अब संस्कृत को, विषयों और सीमाओं से परे इसके महत्व के साथ, भारत से शेष दुनिया में अगले सबसे बड़े सांस्कृतिक निर्यात के रूप में माना जा रहा है। कई लोगों का मानना है कि, भारत में फली-फूली प्राचीन और मध्यकालीन भाषा, आधुनिक दुनिया में अपना सही स्थान पाने के लिए तैयार है। संस्कृत में कई पहलू हैं, जो भाषा विज्ञान से लेकर तर्कशास्त्र और आयुर्वेद से लेकर

सौंदर्यशास्त्र तक विभिन्न क्षेत्रों में इसके महत्व को रेखांकित करते हैं।[17] राष्ट्रीय हस्तलिपि मिशन (National Mission for Manuscripts) द्वारा पहचानी गई 45 लाख हस्तलिपियों में से 25 लाख से अधिक हस्तलिपियां संस्कृत में हैं। संस्कृत विद्वान और अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज (American Institute of Indian Studies) प्रोफेसर, मधुरा गोडबोले (Madhura Godbole) जो पश्चिमी पीएचडी (PhD) छात्रों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रशंसित हैं, उन्होंने कहा "संस्कृत एक ऐसी माला है जिस पर भारतीय सभ्यता के मोती जड़े हुए हैं"।[18] संस्कृत-कातालान (Sanskrit-Catalan) और संस्कृत-स्पेनिश (Sanskrit-Spanish) शब्दकोशों को लिखने वाले पुजोल (Pujol) कहते हैं कि, पहले मध्य युग में और फिर 19 वीं शताब्दी में, दुनिया में ज्ञान में क्रांति लाने के बाद, संस्कृत एक "तीसरी क्रांति" की शुरुआत कर रही है।[19]

परिणाम

पहली क्रांति में, संस्कृत का अरबी (Arabic) और स्पेनिश (Spanish) में अनुवाद देखा गया था। पुजोल कहते हैं, "संस्कृत ने न केवल अरबी, बल्कि कई यूरोपीय भाषाओं को प्रभावित किया और पुनर्जागरण के लिए आधार तैयार किया।" दूसरी क्रांति 19 वीं शताब्दी में शुरू हुई, जब पश्चिमी लोगों ने संस्कृत सीखना शुरू किया, जिससे पश्चिम में भाषाओं के अध्ययन का तरीका बदल गया। पुजोल का मानना है कि तीसरी क्रांति में मनोविज्ञान, सौंदर्यशास्त्र, व्याकरण, अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान, तर्कशास्त्र, व्याख्या का विज्ञान और चेतना के अध्ययन जैसे क्षेत्र शामिल होंगे।[20]

इंटरनेट फर्म (internet firm) अपनी ऑनलाइन बहुभाषी अनुवाद सेवा (online multilingual translation service) द्वारा समर्थित क्षेत्रीय भाषाओं की संख्या में वृद्धि जारी रखे हुए है, इसलिए गूगल ने संस्कृत सहित आठ भारतीय भाषाओं को भी गूगल अनुवाद (Google Translate) में जोड़ा है। गूगल रिसर्च (Google Research) के वरिष्ठ सॉफ्टवेयर इंजीनियर (software engineer) इसहाक कैसवेल (Isaac Caswell) ने एक विशिष्ट साक्षात्कार में ईटी (ET) को बताया कि, गूगल ट्रांसलेट में संस्कृत नंबर वन, सबसे ज्यादा अनुरोधित की जाने वाली भाषा है और हम इसे आखिरकार जोड़ रहे हैं। [21]गूगल अनुवाद के नवीनतम संस्करण में, संस्कृत के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में असमिया (Assamese), भोजपुरी (Bhojpuri), डोगरी (Dogri), कोंकणी (Konkani), मैथिली (Maithili), मिज़ो (Mizo) और मेइतिलोन (मणिपुरी) (Meiteilon (Manipuri)) शामिल हैं। इंटरनेट की दिग्गज कंपनी ने 11 मई को अपने वार्षिक डेवलपर सम्मेलन "Google I/O 2022" में घोषणा की, कि गूगल अनुवाद में, आठ नई भारतीय भाषाओं सहित 24 नई भाषाओं को जोड़ा गया है, यह अब दुनिया भर में अनुवाद सेवा द्वारा उपयोग की जाने वाली कुल 133 भाषाओं का समर्थन करता है। कंपनी ने बताया कि इन नई जोड़ी गई 24 भाषाओं का इस्तेमाल 300 मिलियन से अधिक लोग अपनी पहली या दूसरी भाषा के रूप में करते हैं, उदाहरण के लिए: पूर्वोत्तर भारत में, मिज़ो लगभग 800,000 लोगों द्वारा बोली जाती है और वैसे ही पूरे मध्य अफ्रीका (Central Africa) में, लिंगाला (Lingala) 45 मिलियन से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है।[22]

गूगल ने कहा कि वह इस अपडेट के हिस्से के रूप में पहली बार अमेरिका (Americas) की स्वदेशी भाषाओं जैसे क्वेशुआ (पेरू, बोलीविया, इक्वाडोर) (Quechua (Peru, Bolivia, Ecuador)), गुआरानी (पराग्वे और बोलीविया, अर्जेंटीना और ब्राजील) (Guarani (Paraguay and Bolivia, Argentina and Brazil)), आयमारा (बोलीविया, चिली और पेरू) (Aymara (Bolivia, Chile and Peru)) और एक अंग्रेजी-आधारित बोली क्रियो (सिएरा लियोन) (Krio (Sierra Leone)) को भी सेवा में जोड़ रहा है।[23] गूगल ने बताया कि यहां जीरो-शॉट मशीन ट्रांसलेशन (Zero-Shot Machine Translation) नामक अनुवाद तकनीक का उपयोग करके जोड़ी गई भाषाओं का पहला सेट भी है, जहां मशीन लर्निंग मॉडल (machine learning model), बिना किसी उदाहरण अनुवाद को देखे, केवल एक ही भाषा में ग्रंथों को देखकर किसी अन्य भाषा में अनुवाद करना सीखता है।[24] संसार की महान भाषाओं में संस्कृत सबसे प्राचीन और उत्तम है। इसका ज्ञान का भण्डार संसार का एक नायाब और अमूल्य खजाना है। यह भाषा उस महान भारतीय परंपरा और विचार की सच्ची प्रतीक है, जिसने सत्य की खोज में पूर्ण स्वतंत्रता का परिचय दिया है, सार्वभौमिक सत्य के प्रति उदारता दिखाई है। इस अनूठी भाषा में न केवल इस देश के लोगों के लिए ज्ञान का अच्छा लेखा-जोखा है, बल्कि यह उचित ज्ञान प्राप्त करने का एक अनूठा और सही तरीका भी है और इस प्रकार पूरे विश्व के लोगों के लिए महत्वपूर्ण है।[25]

भारत में, संस्कृत को देवभाषा, अर्थात देवताओं की भाषा के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा, इसे भारतीय भाषाओं की जननी के रूप में भी पहचाना जाता है। हालाँकि, यह केवल एक शास्त्रीय भाषा नहीं है, बल्कि हमारी पुरानी सांस्कृतिक विरासत के एक बड़े हिस्से का भंडार भी है। यह कहना स्पष्ट है कि संस्कृत साहित्य में सभी प्रकार की विद्याएँ, अर्थात् विज्ञान या ज्ञान शामिल हैं।[26]

वेद भारतीय संस्कृति और परंपरा की आत्मा हैं। यह सभी प्रकार के ज्ञान अर्थात ज्ञान का भंडार है, जो समाज में एक स्वस्थ और तनाव मुक्त जीवन बनाए रखने के लिए बहुत उपयोगी है। इसे व्यापक रूप से भौतिकी, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जूलॉजी, गणित, कृषि, पर्यावरण विज्ञान, वास्तुकला विज्ञान (वास्तु-विद्या), ज्यामिति, ज्योतिष, धातु विज्ञान, चिकित्सा, मौसम विज्ञान, आदि सहित विज्ञान के स्रोत या जड़ के रूप में जाना जाता है। संस्कृत के विशाल साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों तथा भाष्य में भी विषयों की अलग-अलग चर्चा की गई है। पारंपरिक और साथ ही आधुनिक विद्याओं या विज्ञानों का रहस्य हमारे प्राचीन ऋषियों, कवियों, लेखकों और टीकाकारों को अच्छी तरह से पता था। इसलिए, अब सभी के लिए पढ़ना लगभग आवश्यक हो गया है.[27]

संस्कृत दुनिया की सबसे रोचक और वैज्ञानिक भाषा है। एक भाषा के रूप में संस्कृत को भाषाई और भाषाविज्ञान के विशेषज्ञों द्वारा संचार का एक आदर्श वाहन माना जाता है। 1786, एक अवधि जब पश्चिम उल्लासपूर्वक भारत से भौतिक और बौद्धिक खजाने प्राप्त कर रहा था, सर विलियम जोन्स ने रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल को अपने संबोधन में कहा है:

"संस्कृत भाषा, चाहे इसकी पुरातनता हो, अद्‌भुत संरचना की है, ग्रीक से अधिक परिपूरण, लैटिन की तुलना में अधिक प्रचुर और अधिक परिष्कृत है।"[28]

व्यावहारिक धरातल पर किसी को यह स्वीकार करना चाहिए कि इसके व्याकरण, ध्वन्यात्मकता, शब्दावली और देवनागरी लिपि के संदर्भ में, संस्कृत संचार का एक अद्‌भुत कुशल माध्यम बन गया है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और संचालन में उपयोग के लिए विभिन्न भाषाओं और लिपियों की सापेक्ष उपयुक्तता के बारे में हाल के अनुभवजन्य अध्ययनों ने संकेत दिया कि देवनागरी लिपि में संस्कृत न केवल उपयुक्त थी बल्कि यह उपयोग के लिए एक इष्टतम माध्यम के रूप में हर आवश्यकता को पूरी तरह से संतुष्ट करती है।[29]

संस्कृत और संस्कृत साहित्य की संस्कृति वास्तव में संश्लेषण और आत्मसात करने की संस्कृति है। संस्कृत साहित्य का संदेश मानवतावाद, मानव जाति की एकता, मूल्यों, शांति और आपसी समझ और व्यक्ति और समाज के सामंजस्यपूर्ण विकास का है।

यह भारत के लोकाचार को पुनर्जीवित करने में मदद करेगा, क्योंकि संश्लेषण, सद्भाव और सामंजस्य संस्कृत की संस्कृति का सार है। यह हमारे प्राचीन साहित्य में सकारात्मक विज्ञानों से संबंधित वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि और अनुसंधान परिणामों के खजाने को खोलने में हमारी मदद करेगा। इसके अलावा, यह हमें कंप्यूटर संचालन में उत्कृष्ट माध्यम के रूप में और नई तकनीक के लिए एक भाषा के रूप में संस्कृत का उपयोग करने में मदद करेगा। इनके अलावा, यह हमें भारत की विभिन्न भाषाओं को मज़बूत करने में मदद करेगा। जैसा कि महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा था:

“संस्कृत हमारी भाषाओं के लिए गंगा नदी की तरह है। मुझे हमेशा लगता है कि अगर यह सूख गया तो क्षेत्रीय भाषा भी अपनी जीवंतता और शक्ति खो देगी। मुझे ऐसा लगता है कि संस्कृत का प्रारंभिक ज्ञान आवश्यक है। यह मेरी ओर से भावना नहीं है जो मुझे ऐसा कहने के लिए मजबूर करती है, बल्कि इस महान भाषा की हमारे देश की उपयोगिता और इसके विशाल ज्ञान का व्यावहारिक विचार है।

8 अप्रैल 1983 को श्रीमती इंदिरा गांधी ने सम्पूर्ण एवं संस्कृत विश्वविद्यालय में संस्कृत के विद्वानों को सम्बोधित करते हुए कहा था: " यदि संस्कृत का सरलीकरण किया जाता तो यह अलग-अलग राज्यों के लोगों के बीच एक बेहतर कड़ी के रूप में काम कर सकती थी और भाषा की समस्या को हल कर सकती थी" [30]

यह सच है कि संस्कृत हमारी भाषा की समस्या को बहुत हल कर देती है, अगर इसे सरल बनाया जाए। अतः इस भाषा की प्रमुख उपयोगिता के लिए व्याकरणिक नियमों तथा अन्य ध्वन्यात्मक अनुप्रयोगों को सरल बनाना संस्कृत के विद्वानों का कर्तव्य है।

यहां संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ संस्कृत के शोधार्थियों और प्रेमियों के हित में संस्कृत भाषा और उसके कम्प्यूटर में उचित अनुप्रयोग पर चर्चा की जाएगी।[26]

निष्कर्ष

इस आधुनिक युग में संस्कृत को विश्व की वैज्ञानिक भाषाओं में से एक माना जा रहा है। इसकी लिपि, यानी देवनागरी भी कंप्यूटर द्वारा इसके विभिन्न कार्यक्रमों में आसानी से उपलब्ध है।

हालाँकि, यह ज्ञात है कि कंप्यूटर अब समाज में लोगों की सभी प्रकार की प्रगति के लिए आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में वैश्विक क्रांति के एक नए युग की शुरुआत करने में शक्तिशाली साधन के रूप में उभर रहे हैं। प्रौद्योगिकी की शक्ति के साथ संयुक्त रूप से शिक्षा के इन नए साधनों द्वारा दिए गए लाभों को भारत और विदेशों में भी संस्कृत अध्ययन के उद्देश्य से अपनाया और अपनाया जा रहा है। सामान्य कक्षा-कक्ष वातावरण में संस्कृत अध्ययन की सुविधा के लिए कंप्यूटर प्रौद्योगिकी का उपयोग, संवादात्मक वाक्यों के रूप में संस्कृत के मूल सिद्धांतों का व्यक्तिगत और समूह सीखना, ज्योतिष के लिए शिक्षण पैकेज, वास्तु विज्ञान (वास्तु-विद्या), संस्कृत व्याकरण, खगोल विज्ञान, आदि। अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के माध्यम से रुचि के विषय पर आधारित।[28]

हालाँकि, पारंपरिक संस्कृत अध्ययन को संरक्षित, लोकप्रिय बनाने और प्रचारित करने के लिए कंप्यूटर प्रौद्योगिकी को सही उपकरण के रूप में उपयोग किया जा रहा है। वर्तमान में, कई संस्कृत ग्रंथ, जैसे। वैदिक ग्रंथ, महाभारत, राम्याण, पाणिनी के आन्ध्य्या, पुराण, काव्य, नादक आदि इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। ये ग्रन्थ रोमन लिपि में विशेषक चिन्हों के साथ उपलब्ध हैं, जिसके फलस्वरूप शोधकर्त्ताओं के साथ-साथ भारतीय ज्ञान और संस्कृति के प्रशंसक इंटरनेट पर उपलब्ध ग्रन्थों के माध्यम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ तांत्रिक ग्रंथ और कुछ अन्य दुर्लभ ग्रंथ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। विश्व के प्रसिद्ध अनुसंधान संस्थानों की अपनी वेब-साइटें हैं, जिनमें उनकी शैक्षणिक गतिविधियाँ और अनुसंधान अकादमी, मेलकोले; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली; राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली; केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ; विपश्यना अनुसंधान केंद्र, (अनुसंधान केंद्र), इगतपुरी, महाराष्ट्र; मुग्धबोध सोसायटी (अनुसंधान केंद्र), बॉम्बे; सी-डैक, बॉम्बे और भारत के अन्य प्रमुख संस्थानों और विश्वविद्यालयों ने अलग-अलग सॉफ्टवेयर के साथ-साथ डेटा पैकेज भी विकसित किए हैं।

मुग्धबोध सोसायटी, बॉम्बे की वेबसाइट पर प्रमुख तांत्रिक ग्रंथ उपलब्ध हैं। यहां तक कि कुछ दुर्लभ तांत्रिक ग्रंथों को भी उक्त वेबसाइट में स्थान मिलता है। वेबसाइटों पर उपलब्ध इन ग्रंथों से विदेशी विद्वानों को सीधा लाभ होता है। इसके अलावा, 217 (बौद्ध) पाली ग्रंथ सीडी रोम में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय लिपियों में भी उपलब्ध हैं, जैसे: रोमन, देवनागरी, थाई, मुयामार, सिंहली, खमेर और मंगोल। यह जबरदस्त काम विपश्यना शोध संस्थान, इगतपुरी ने किया है। सॉफ्टवेयर में दिए गए शक्तिशाली सर्च इंजन की मदद से विशेष शब्दों और वाक्यांशों के लिए सभी ग्रंथों को आसानी से खोजा जा सकता है, जिससे सीएससीडी पाली के शोधार्थियों के लिए एक मूल्यवान साथी बन जाता है। उनकी अपनी वेबसाइट भी है, जिसमें ये ग्रंथ उपलब्ध हैं। हालाँकि, पाली ग्रंथ,यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि आज भी ज्योतिषी और वास्तुविद् विभिन्न सॉफ्टवेयर और प्रोग्राम के माध्यम से शुभ तिथियों, अवधियों और अन्य महत्वपूर्ण भविष्यवाणियों की भविष्यवाणी करने के साथ-साथ गणना करने के लिए कंप्यूटर का उपयोग कर रहे हैं।[29]

माइक्रोफिल्म और डिजिटलीकरण प्रणाली के माध्यम से ताड़ के पत्ते और भुरजा के पत्तों के रूप में भारतीय विरासत, यानी संस्कृत पांडुलिपियों को अच्छी तरह से संरक्षित किया जा रहा है। इन पांडुलिपियों को सीडी और अन्य संबंधित तकनीक के माध्यम से कंप्यूटर में भी पढ़ा और देखा जा सकता है।

संक्षेप में: संस्कृत अब कंप्यूटर से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, जिसके माध्यम से संस्कृत के शोधकर्ता, पाठक और छात्र लाभान्वित होते हैं। यह संस्कृत शिक्षा की दिशा में एक सकारात्मक दृष्टिकोण है जो अब इन आधुनिक उपकरणों के माध्यम से अधिक व्यापक और आसानी से प्राप्त करने योग्य है। अत: अन्ततः यह कहा जा सकता है कि आने वाले दिनों में संस्कृत भारत की सर्वमान्य भाषा होगी जिसके माध्यम से हमारी राष्ट्रीय विरासत एवं पुराने परम्परागत मूल्यों की रक्षा होगी, जिसके फलस्वरूप हम शांति से रह सकेंगे। यह हमारे जीवन का मुख्य लक्ष्य है, जो अनैतिक काल से विशाल संस्कृत ग्रंथों में अच्छी तरह से संरक्षित पारंपरिक विद्याओं के माध्यम से संभव है। समाप्त करने से पहले, मैं हमारे पहले प्रधान मंत्री पं। जवाहर लाल नेहरू, जिनका इस (संस्कृत) भाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण था। तो उन्होंने कहा है:"अतीत चला गया है और वर्तमान हमारे साथ है और हम भविष्य के लिए काम करते हैं। लेकिन मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि भविष्य जो भी आकार ले सकता है, सबसे बड़ी, सबसे मजबूत और सबसे शक्तिशाली और सबसे मूल्यवान हमारी विरासतों में से एक संस्कृत भाषा होगी।[30]

"जयतु संस्कृतम"

संदर्भ

1. Mascaró, Juan (2003). The Bhagavad Gita. Penguin. पपृ° 13 , ff. आईऍसबीऍन° 978-0-14-044918-1. The Bhagawad Gita, an intensely spiritual work, that forms one of the cornerstones of the Hindu faith, and is also one of the masterpieces of Sanskrit poetry. (from the backcover)
2. ↑ Besant, Annie (trans) (1922). The Bhagavad-gita; or, The Lord's Song, with text in Devanagari, and English translation. Madras: G. E. Natesan & Co. प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥ २० ॥ Then, beholding the sons of Dhritarâshtra standing arrayed, and flight of missiles about to begin, ... the son of Pându, took up his bow,(20) हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते । अर्जुन उवाच । ...॥ २१ ॥ And spake this word to Hrishîkesha, O Lord of Earth: Arjuna said: ...
3. ↑ Radhakrishnan, S. (1948). The Bhagavadgītā: With an introductory essay, Sanskrit text, English translation, and notes. London, UK: George Allen and Unwin Ltd. पृ° 86. ... pravyite Sastrasampate dhanur udyamya pandavah (20) Then Arjuna, ... looked at the sons of Dhrtarastra drawn up in battle order; and as the flight of missiles (almost) started, he took up his bow.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

hystkesam tada vakyam
idam aha mahipate ... (21)
And, O Lord of earth, he spoke this word to Hrsikesha (Krsna): ...

4. ↑ "Comparative speaker's strength of scheduled languages -1971, 1981, 1991 and 2001". Census of India, 2001. Office of the Registrar and Census Commissioner, भारत. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2009.
5. ↑ "'The Old Vedic language had its origin outside the subcontinent. But not Sanskrit.'".
6. ↑ Sagarika Dutt (2006). India in a Globalized World. Manchester University Press. p. 36. ISBN 978-1-84779-607-3.
7. ↑ Gabriel J. Gomes (2012). Discovering World Religions. iUniverse. p. 54. ISBN 978-1-4697-1037-2.
8. ↑ अमेरिकी पत्रिका (साइंटिफिक अमेरिकन) का दावा- संस्कृत मंत्रों के उच्चारण से बढ़ती है याददाश्त (जनवरी २०१८)
9. ↑ Is Sanskrit the most suitable language for natural language processing?
10. ↑ Guide to OCR for Indic Scripts: Document Recognition and Retrieval (edited by Venu Govindaraju, Srirangaraj Ranga Setlur)
11. ↑ We should thank Sanskrit for the 21st century
12. ↑ Tracing the Trajectory of Linguistic changes in Tamil: Mining the corpus of Tamil Texts
13. ↑ 'Sanskrit has had profound influence on world languages'
14. ↑ Sanskrit's Influence on Khmer
15. ↑ Sanskrit had an influence on Chinese language
16. ↑ How Sanskrit Language Is Associated With The Tibet and Xinjiang?
17. ↑ Jan Gonda (1975), Vedic literature (Saṃhitās and Brāhmaṇas), Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 3-447-01603-5
18. ↑ Teun Goudriaan, Hindu Tantric and Śākta Literature, Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 3-447-02091-1
19. ↑ Dhanesh Jain & George Cardona 2007.
20. ↑ Hartmut Scharfe, A history of Indian literature. Vol. 5, Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 3-447-01722-8
21. ↑ Keith 1996.
22. ↑ Duncan, J.; Derrett, M. (1978). Gonda, Jan (संपा°). Dharmasastra and Juridical Literature: A history of Indian literature. 4. Otto Harrassowitz Verlag. आई°ऍस°बी°ऍन° 3-447-01519-5.
23. ↑ Keith 1996, ch 12.
24. ↑ Olivelle, Patrick (31 January 2013). King, Governance, and Law in Ancient India. Oxford University Press. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-0-19-989182-5.
25. ↑ Kim Plofker (2009), Mathematics in India, Princeton University Press, ISBN 978-0-691-12067-6
26. ↑ Pingree, David. A Census of the Exact Sciences in Sanskrit. 1–5. American Philosophical Society. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-0-87169-213-9.
27. ↑ Valiathan, M.S. (2003). The Legacy of Caraka. Orient Blackswan. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-250-2505-4.
28. ↑ Zysk, Kenneth (1998). Medicine in the Veda. Motilal Banarsidass. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-81-208-1401-1.
29. ↑ Meyer, J.J. (22 February 2013). Sexual Life in Ancient India. 1 & 2. Oxford University Press. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-1-4826-1588-3.
30. ↑ Keith 1996, ch 14.

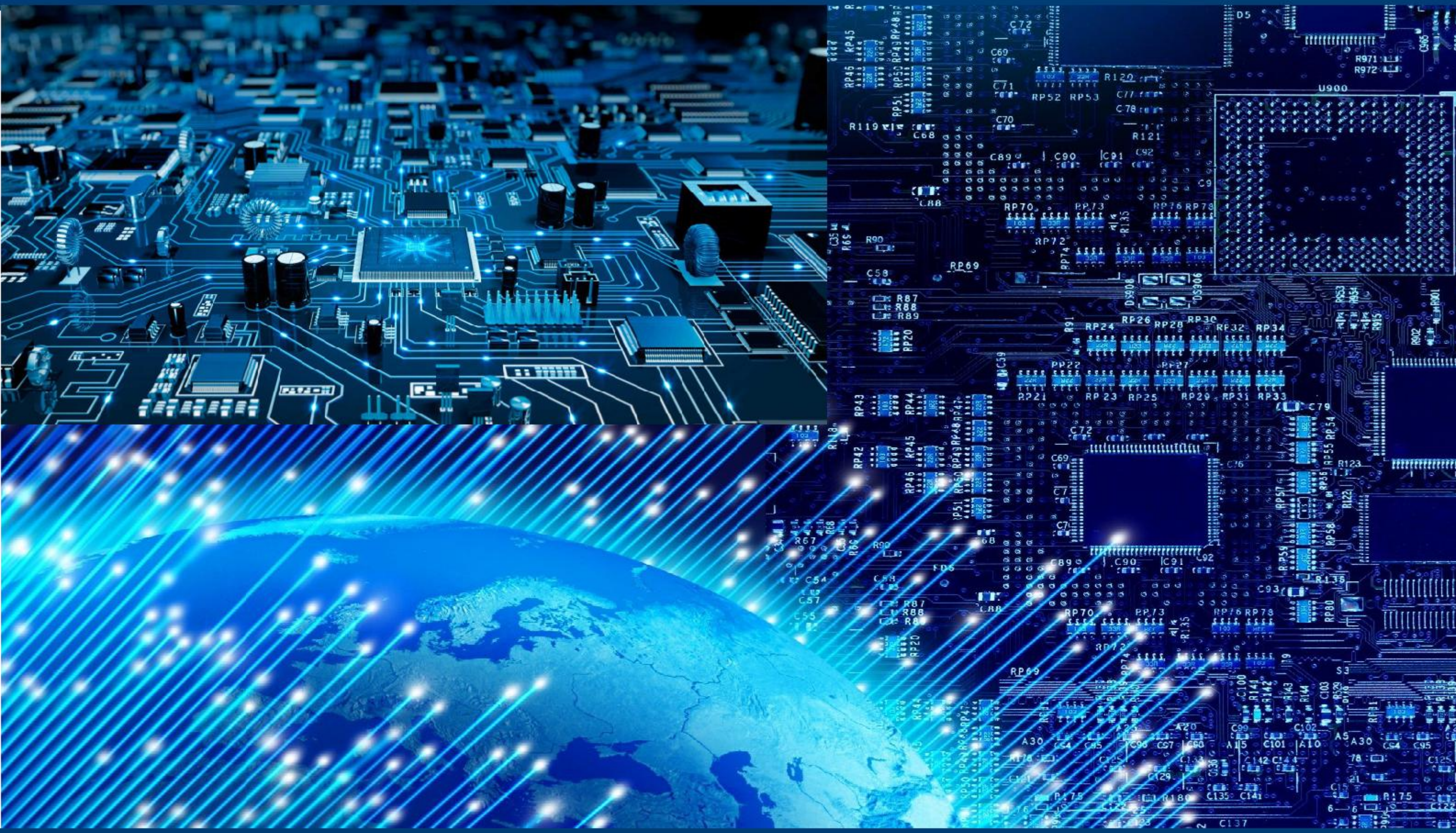

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com